# व्याख्या सहित उत्तर

1. *(क)* साक्षरता का अर्थ व्यक्ति का शिक्षित होना है। अक्षर ज्ञान ही नहीं, बल्कि भाषा का शुद्ध संप्रेषण तथा विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति साक्षरता के आगे की प्रक्रिया है। साक्षरता व्यक्ति के चिंतन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है।

*(ख)* भाषा का संप्रेषण तथा विचारों की अभिव्यक्ति साक्षरता के बिना संभव नहीं है। कुछ लोग मानते हैं कि चिंतन का आधार मन है, जिससे संप्रेषण संभव होता है, किंतु ऐसा नहीं है। भाषा के संप्रेषण तथा विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अक्षर ज्ञान अनिवार्य है।

*(ग)* भाषा का ज्ञान नहीं होने पर विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त करना कठिन होता है। विचारों के समुचित संप्रेषण के लिए भाषा का ज्ञान अनिवार्य है। किसी बात को समझना तथा समझाना भाषा द्वारा ही संभव है।

*(घ)* भारत में लंबे समय तक राज्य द्वारा शिक्षा का समुचित प्रबंध नहीं किया गया। शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में कई बाधाएँ आईं। आर्थिक पिछड़ापन एक मुख्य कारण रहा, जिसने निरक्षरता को लगातार बढ़ावा दिया।

*(ङ)* स्वतंत्रता के बाद देश के सभी नागरिकों को साक्षर बनाना अनिवार्य माना गया। आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को साक्षर बनाना एक बड़ी चुनौती थी। इसके लिए आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करना तथा साक्षरता को बढ़ावा देना साथ-साथ ज़रूरी था।

*(च)* जन साक्षरता आंदोलन का मुख्य उद्देश्य प्रौढ़ निरक्षरता का उन्मूलन करना है। इसे सफल बनाने के लिए इस साक्षरता आंदोलन में युवा वर्ग को शामिल करने का निर्णय लिया गया।

*(छ)* प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'साक्षरता का महत्त्व' हो सकता है।

2. *(क)* कवि मनुष्य के अधिकार तथा श्रम को महत्त्व देता है। इसी कारण वह स्वप्न तथा जागरण को एक छलावा मात्र मानता है।

*(ख)* कवि ने भूतकाल को 'जल्पना' तथा भविष्य को 'कल्पना' कहा है। वह अतीत की स्मृति में खोकर अपने भविष्य को संकुचित नहीं करना चाहता।

*(ग)* जीवन की विवशता से घिरे कवि को जीवन तथा मरण दोनों व्यर्थ लगते हैं। व्यर्थता का बोध तब सामने आता है, जब जीवन में किसी सार्थक क्रिया-प्रक्रिया का अभाव होता है।

*(घ)* कवि का मन यह नहीं जानता कि उसकी गर्दन को कौन पकड़कर यह कहने के लिए विवश कर दे कि जीवन भी व्यर्थ है तथा मरण भी व्यर्थ है।

***अथवा***

*(क)* प्रस्तुत काव्यांश में 'निशीथ का दिया' आधी रात के समय भारत की स्वतंत्रता को कहा गया है।

*(ख)* प्रस्तुत काव्य-पंक्ति का आशय यह है कि अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के फलस्वरूप मनुष्य ने अपनी स्थिति को और अधिक शक्तिशाली बना लिया है।

*(ग)* काव्यांश के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वदेश का यह दिया अर्थात् स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह अपना देश प्राणों के समान प्रिय है।

*(घ)* काव्यांश के अंतर्गत 'दिये' को 'शहीद का पुण्य-प्राणदान' इसलिए कहा गया है, क्योंकि इस 'दिये' रूपी स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए देश के अनेक वीर शहीदों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

3. **जीवन में अध्यापक का महत्त्व**

कोई भी व्यक्ति महान् बनता है, तो उसमें उसके गुरु का सर्वाधिक योगदान होता है। अच्छे गुरु एवं माता-पिता सदैव शिष्य व पुत्र से पराजय की कामना करते हैं अर्थात् उसे अपने से श्रेष्ठ बनते हुए देखना चाहते हैं। भारत देश में तो गुरु का स्थान ईश्वर से भी बढ़कर बताया गया है

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।''

अर्थात् गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है तथा गुरु ही महेश है। ऐसे ईश्वर स्वरूप गुरुवर को सत-सत प्रणाम।

अध्यापक अपना संपूर्ण ज्ञान शिष्य को प्रदान कर उसका सर्वांगीण विकास करता है, इसीलिए अध्यापक या गुरु को ईश्वर से बड़ा बताते हुए 'कबीरदास जी' ने भी कहा है–

''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।''

अर्थात् गुरु और गोविंद दोनों खड़े हैं। मैं किसके चरण स्पर्श करूँ? लेकिन वह तुरंत कहते हैं मैं उस गुरु के बलिहारी जाऊँ, जिसने मुझे भगवान से मिलाया है। अध्यापक बनने के लिए व्यक्ति में अध्यापकत्व होना आवश्यक है। सबसे पहले अध्यापक की वेशभूषा साधारण होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। अध्यापक को समय का सदैव ध्यान रखना चाहिए। विद्यालय में अनुकरणीय आचरण करना, विद्यार्थियों के प्रश्नों को ध्यान से सुनना तथा समुचित उत्तर देना, अध्ययन में कमज़ोर विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देना, विद्यार्थियों की गलती पर उन्हें प्रेम से समझाना, एक आदर्श अध्यापक के गुण हैं। मधुर वाणी, सहज स्वभाव, शांत मन तथा कर्तव्यनिष्ठता से विद्यार्थियों का प्रेरणा स्रोत बनना अध्यापक का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए।

यदि मैं अध्यापक बनूँगा, तो मैं सबसे पहले अपने स्वास्थ्य तथा चरित्र पर ध्यान दूँगा, ताकि बुरी आदतों को सदैव अपने से दूर रख सकूँ। कभी नशा नहीं करूँगा, विद्यार्थियों को असत्य जानकारी नहीं दूँगा, कभी भी अपनी कक्षा नहीं छोड़ूँगा। मैं सदा मर्यादित भाषा का प्रयोग करूँगा, छात्रों पर क्रोध नहीं करूँगा और हमेशा सेवा भाव से शिक्षण कार्य करूँगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक अपनी गरिमामयी छवि बना सकता है और अपने कार्यक्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो सकता है।

*अथवा*

**वर्तमान युग में रिश्ते-नातों की अहमियत**

मानव जीवन में रिश्ते-नातों का बहुत महत्त्व है। इनके अभाव में जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अकेला मानव, जीवन जी ही नहीं सकता। सृष्टि निर्माण के समय, प्रलय के दौरान जब चारों ओर जल ही जल था, तब केवल मनु पृथ्वी पर अकेले थे। उन्होंने भी यही उपासना की थी कि उनके उद्धार व लक्ष्य प्राप्ति हेतु पृथ्वी पर किसी को भेजा जाए, तब परमात्मा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके श्रद्धार को भेजा था।

प्राचीनकाल से संयुक्त परिवारों का चलन रहा है, जिससे इंसान में अपनापन, प्रेम, त्याग, भ्रातृत्व, सहयोग की भावना विद्यमान रहती थी। इंसान उन रिश्तों के कारण प्रसन्नचित्त जीवनयापन करता था। इन रिश्तों के द्वारा ही इंसान सामाजिक जीवन जी पाता है तथा यही मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण भी है।

वर्तमान समय एकल परिवारों के समय का है, जिसमें इंसान अपने दायित्ववश इतना ज़्यादा व्यस्त रहने लगा है कि रिश्ते-नातों को भी भूलने लगा है। इस कारण उसमें अपनेपन की भावना समाप्त होने लगी है तथा स्वार्थ व धन-लालसा जीवन में महत्त्वपूर्ण हो गई है। इस कारण परस्पर ईर्ष्या की भावना बढ़ती जा रही है। अकेला मानव सुखद जीवन जी ही नहीं सकता। अपने मानसिक सुख के लिए उसे समाज से मिलकर रहना ही होगा, जिसके लिए रिश्तों को निभाना अत्यंत आवश्यक है। रिश्तों को मज़बूत बनाने के लिए इंसान को कुछ समय रिश्तेदारों के लिए निकालना ही होगा, सुख-दुःख के समय उनके पास उपलब्ध रहना होगा, तभी रिश्तों का बने रहना संभव है।

एक कहावत है ''रिश्ते-नातों के विकास के लिए, मेल-जोल, अपनापन आवश्यक है। बिना पानी के तो पौधे तक सूख जाते हैं।''

इंसान को अपने अहंकार को त्यागकर, प्रेम तथा मेल-जोल की भावना का विकास करना होगा। तब ही इन रिश्ते-नातों का अस्तित्व बच पाएगा, वरना वह दिन दूर नहीं कि इंसान अपने रिश्ते-नातों से इतनी दूर चला जाएगा कि एकल जीवन नरक की भाँति प्रतीत होने लगेगा और संभवतः यह सृष्टि का अंतिम समय होगा।

**4.** सेवा में,

अध्यक्ष, नगरपालिका
हजारीबाग।

**विषय** सड़कों की दुर्दशा के विषय में।

महोदय,

एक सचेत नागरिक होने के नाते मैं आपका ध्यान नगर की सड़कों की दुर्दशा की ओर दिलाना चाहता हूँ। आज पूरे नगर में एक भी मुख्य सड़क ऐसी नहीं है, जिस पर गड्ढों और गंदगी का अंबार न हो। बस-अड्डे से शहर की ओर जाने वाले मार्ग पर चलते हुए प्रायः ट्रैफिक जाम रहता है। उसका कारण है—सड़कों का टूटा होना, बीच में पशुओं का बैठा होना या नगरपालिका द्वारा सड़कों को तोड़ा जाना आदि। ऐसा लगता है, जैसे व्यवस्था नाम की कोई चीज़ इस नगर की सड़कों पर नहीं रही।

आपसे निवेदन है कि इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई कर इसे ठीक किया जाए।

धन्यवाद।

एक नागरिक
अशोक 'जोश'

***अथवा***

सेवा में,
वाणिज्य प्रबंधक,
'प्रचंड भारत',
जी टी करनाल रोड,
दिल्ली-110009।

**दिनांक** 18 मई, 20XX

**विषय** अंशकालिक नियुक्ति हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 17 मई, 20XX के 'प्रचंड भारत' दैनिक समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के प्रत्युत्तर में, समाचार-पत्र की प्रसार संख्या बढ़ाने हेतु ग्रीष्मावकाश में कार्य करने के लिए मैं अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करने के लिए आवेदन करना चाहता हूँ। *संबंधित विवरण निम्नलिखित है*

| | |
|---|---|
| **नाम** | क. ख. ग. |
| **पिता का नाम** | च. छ. ज. |
| **शिक्षा** | दसवीं (परिणाम प्रतीक्षा में) |
| **रुचि** | पढ़ना व घूमना |
| **अनुभव** | 9वीं कक्षा के पश्चात् भी ग्रीष्मावकाश में दो महीने मैंने यह कार्य किया था। |

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपके समाचार-पत्र की प्रसार-संख्या को पूर्व की भाँति बढ़ाने में योगदान देकर अपने समय का सदुपयोग कर सकूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपने परिश्रम, निष्ठा तथा सद्व्यवहार से सबको संतुष्ट रखूँगा।

धन्यवाद।

प्रार्थी
क. ख. ग.
गणेश नगर,
दिल्ली

**5.** ***(क)*** जिन जनसंचार माध्यमों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का सहारा लिया जाए, उसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम कहते हैं। रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं।

***(ख)*** जब किसी समाचार या घटना का सीधे घटना-स्थल से ही प्रसारण किया जाता है, तो उसे 'लाइव' समाचार कहते हैं।

***(ग)*** दूरदर्शन पर समाचार पढ़ते हुए वाचक को भाषा, हाव-भाव आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

***(घ)*** टी.वी. लोकप्रिय माध्यम इसलिए है, इसके सहारे शब्द, ध्वनि और दृश्य तीनों के प्रभाव का सम्मिलित आनंद लिया जा सकता है।

***(ङ)*** जब किसी टेलीविजन चैनल का पत्रकार छिपे हुए या जासूसी कैमरे के जरिए किसी गैर-कानूनी, अवैध या असामाजिक गतिविधियों को फिल्माता है और अपने चैनल पर प्रसारित करता है, तो इसे स्टिंग ऑपरेशन कहा जाता है। कई बार चैनल ऐसे ऑपरेशनों को गोपनीय कोड भी दे देते हैं; जैसे—ऑपरेशन चक्रव्यूह।

**6.** नाटक का प्रथम भाग (अंक) समय का बंधन है। समय का यह बंधन नाटक की रचना पर अपना पूरा प्रभाव डालता है, इसीलिए इसे शुरुआत से लेकर अंत तक एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। नाटक का विषय भूतकाल हो या भविष्यकाल दोनों ही स्थितियों में नाटक वर्तमान काल में संयोजित होता है। यही कारण है कि नाटक के मंच निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। चाहे काल कोई भी हो उसे एक समय में, एक स्थान विशेष पर वर्तमान काल में ही घटित होना होता है।

समय को लेकर एक और तथ्य यह है कि साहित्य की अन्य विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, कविता को हम कभी भी पढ़ते तथा सुनते हुए बीच में रोक सकते हैं और कुछ समय बाद फिर वहीं से पढ़ना या सुनना शुरु कर सकते है, परन्तु नाटक के साथ ऐसा संभव नहीं है। नाटक के तीन अंक होते हैं। उसे भी समय को ध्यान में रखकर बाँटने की जरूरत होती है।

***अथवा***

पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों और तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। अतः इनके द्वारा कविता बनी। वाचिक परम्परा से जन्मी कविता आज लिखित रूप में उपलब्ध है। कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं जिसमें एक का मानना है कि अन्य कलाओं की तरह कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय संवेदनाओं से है, जबकि दूसरा मत यह है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता को भी सरल बनाया जा सकता है।

## 7. युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति

जीवन विधाता का वरदान है, परंतु युवा पीढ़ी इस वरदान को अभिशाप बनाने की ओर अग्रसर है। आज की युवा पीढ़ी सही दिशा-निर्देश के अभाव में तेज़ी से नशे की प्रवृत्ति का शिकार होती जा रही है। युवा अपने कर्म से विमुख हो नशे के गर्त में डूबकर अपना जीवन व्यर्थ गवाँ रहे हैं।

शिक्षा के मंदिरों में भी नशे का व्यापार चरम पर चलता है। नशे के व्यापारी कमज़ोर मानसिकता वाले युवाओं को अपने जाल में फँसाने का कार्य स्कूल, कॉलेजों आदि में भली प्रकार से कर लेते हैं। जो एक बार नशे की लत का शिकार हो गया, वह आसानी से छूट नहीं पाता। तनाव, असमंजसता, अकेलेपन, घुटन आदि के चलते युवा पीढ़ी नशे का शिकार बनती जा रही है। बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि तो नशे के पुराने साधन हो गए हैं, आज की पीढ़ी तो चरस, स्मैक, ब्राउनशूगर, हेरोईन, अफीम आदि के नशे का शिकार हो रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा वर्ग अपनी शक्ति और दायित्व दोनों को समझे। स्वस्थ वातावरण में रहे, अच्छी पुस्तकें पढ़े, काम में व्यस्त रहे और मौत के व्यापारियों को चिह्नित कर उन्हें सजा दिलवाए। युवा कंधों पर देश की ज़िम्मेदारी टिकी होती है। यदि ये कंधे ही कमज़ोर हो गए तो देश की प्रगति लड़खड़ा जाएगी। युवा वर्ग को अपनी भूमिका समझनी होगी, तब ही इस घातक बीमारी से मुक्ति मिल सकती है।

***अथवा***

### चुनावी माहौल

यह भारतीय राजनीति के लिए बदलाव का दौर है। इस वर्ष देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में आम चुनाव संपन्न होने हैं। ऐसे में चुनावी माहौल बन गया है। प्रत्येक पार्टी जीतने के लिए अपना पूरा जोर लगा रही है। इसके लिए पार्टियों ने प्रचार के भिन्न-भिन्न तरीके खोज लिए हैं। हर पार्टी यह सिद्ध कर देना चाहती है कि उसकी सरकार सबसे अच्छी सरकार होगी। खैर, यह तो वक्त ही बताएगा कि जनता किसे अपना प्रतिनिधि चुनती है। आजकल चुनाव प्रचार पूरे जोर-शोर से किया जा रहा है। आप अपने चारों ओर नजर उठाकर देखेंगे, तो पाएँगे कि आपके चारों ओर किसी-न-किसी पार्टी के नेता जगह-जगह रैली निकाल रहे है, भीड़ जुटा रहे हैं और लोगों को सुशासन का स्वप्न दिखा रहे है।

एक गौर करने वाली बात और है। इस बार भारत में चुनाव प्रचार के तरीकों में कुछ नए तरीके भी जुड़ गए है। अब, सभी पार्टियाँ इंटरनेट तकनीक का जमकर इस्तेमाल कर रही है। ट्विटर, फेसबुक, वाट्स अप आदि सोशल नेटवर्किंग साइटों के माध्यम से उम्मीदवार सीधे जनता से संपर्क कर रहे है और समर्थन जुटा रहे हैं। अब चुनाव प्रचार रैलियों तक सीमित नहीं रह गया है। बड़ी पार्टियों ने भी इंटरनेट प्रचार पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। अब देखने वाली बात यह होगी कि इस चुनावी माहौल का रंग कितने वोटरों पर चढ़ पाता है। हम आशा करते हैं कि चुनाव प्रचार के व्यापक तरीकों से मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी होगी।

**8.** ***(क)*** काव्यांश में कवि एक ऐसी स्थिति का वर्णन कर रहा है, जब किसान खेती करने में असमर्थ था। भिखारी को माँगने पर भिक्षा नहीं मिल पा रही थी। वणिक वर्ग वाणिज्य की गतिविधियाँ संचालित नहीं कर पा रहा था और नौकरी की इच्छा रखने वालों को नौकरी नहीं मिल पा रही थी।

***(ख)*** जीविकाविहीन लोग किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में थे। उन्हें कोई उपाय नहीं दिख रहा था। वे एक-दूसरे से केवल इतना ही कहते पाए जाते थे कि 'क्या करें, क्या न करें'। यह जनता की दुरावस्था का काल है।

***(ग)*** गरीबी तथा बेकारी की ऐसी स्थिति व्याप्त थी कि लोग कुछ भी सोच पाने में असमर्थ थे। ऐसी स्थिति में विवश लोगों के लिए ईश्वर का आश्रय ही संबल था। यही कारण है कि कवि ने राम की कृपा को सर्वाधिक महत्त्व दिया है।

***अथवा***

***(क)*** कवि कविता को फूलों का खिलना तथा बच्चों का खेल मानता है। वह फूल के खिलने से तथा बच्चों के खेल से कविता का स्रोत प्राप्त करता है। उसके लिए कविता फूलों के खिलने से अधिक, बच्चों के खेलने के समान है।

***(ख)*** कवि फूलों के खिलने को कविता का स्रोत मानता है, लेकिन कवि जानता है कि फूलों को भला यह कैसे पता होगा कि उनके खिलने, महकने तथा पूरी दुनिया को महकाने की चेतना पर कविता लिखी गई है और इस कविता की महक उनकी महक की अपेक्षा अधिक दीर्घकालीन एवं प्रभावी है। फूल तो केवल खिलना और महकना जानते हैं।

***(ग)*** कवि बच्चों के बहाने कविता को एक खेल मानता है। बच्चों की दुनिया कोई परिधि नहीं मानती। बच्चे सब घरों को एक कर देते हैं। कविता भी किसी परिधि में बँधकर नहीं रहती। उसकी दुनिया भी बच्चों की तरह विस्तृत है।

**9.** ***(क)*** 'पतंग' शीर्षक कविता का यह अंश बच्चे की चपलता तथा उसके मनोभाव को चित्रित करता है। कवि मानता है कि बच्चे के शरीर में संगीत का निर्बाध प्रवाह है, जिसके सहारे वे छतों के खतरनाक किनारों पर पहुँचकर भी गिरने से बच जाते हैं। बच्चों को ऐसा महसूस होता है कि वे भी पतंगों के साथ-साथ आकाश की ऊँचाई में उड़ते चले जा रहे है। कवि ने काव्यांश में मोहक दृश्य बिंब तथा प्रतीकों का सहारा लिया है।

***(ख)*** कवि पतंग, धागे, रोमांचित शरीर का संदेश इत्यादि प्रतीकों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान तथा बच्चे की चेष्टाओं को सामने लाने का प्रयास करता है।

'पतंग' महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक है। यह जीवन में ऊँचाई पाने की लालसा से जुड़ती है। बच्चे और पतंग के बीच 'धागा' सामाजिक संरचना का प्रतीक है, जिसे पकड़े हुए बच्चा पतंग के साथ उड़ने का अहसास करता है। बच्चे की अंतःशक्ति रोमांचित शरीर का संदेश है, जो उसे संघर्ष करने की क्षमता से लैस करता है।

**अथवा**

(क) कवि निजी प्रेम को खुले शब्दों में स्वीकार करता है। वह किसी भी प्रकार के निषेध और कुंठा से रहित है।

(ख) कवि के लिए 'जग-जीवन का भार' से आशय है—सांसारिक रिश्ते-नातों और दायित्वों को निभाने की जिम्मेदारी, जिन्हें न चाहते हुए भी निभाना पड़ता है।

10. **(क)** कवि जनसंचार माध्यमों की मुखौटाधर्मिता को सामने लाता है। मीडिया मानवीय करुणा के मुखौटे के साथ एक ऐसी क्रूरता का प्रदर्शन करता है, जो केवल उस अपाहिज को महसूस होता है, जिसे कैमरे में बंद किया जा रहा है। बाहरी सहानुभूति जताते हुए, अपाहिज के दु:ख-दर्द को बेचकर मीडिया धन कमाना चाहता है। साथ ही वह अपनी मानवीयता का ढोंग भी करता है। अपाहिज व्यक्ति को जल्दी अपना कष्ट बताने को कहने वाले चैनल के लिए 'वक्त की कीमत' है। मीडिया कम समय में सब कुछ दिखा देना चाहता है।

**(ख)** कवि चाँदनी के रूप में स्वयं पर आच्छादित अपनी प्रिया को छोड़ना चाहता है, ताकि वह अकेले जीने की आदत डाल पाए। प्रिय की अधिक आत्मीयता ने उसे कमज़ोर बना दिया है। अब वह इस स्थिति से बाहर निकलना चाहता है और प्रिय के बिना होने वाली हर रात की अमावस को स्वीकारना चाहता है। वह अपने व्यक्तित्व में दृढ़ता लाना चाहता है। उसे अपनी इस प्रिया का अत्यधिक प्यार सहन नहीं हो पा रहा है।

**(ग)** तुलसी रामभक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि हैं। राम की भक्ति में उन्हें अनुपम सुख मिलता है, लेकिन कवि पेट की आग बुझाने के लिए आर्थिक क्रिया कलापों को ज़रूरी मानते हैं, जिसकी चर्चा उन्होंने कविता में की है। दरिद्रता का कारण भी ऐसी आर्थिक क्रियाओं का शिथिल पड़ जाना है। रामभक्ति के मेघ द्वारा पेट की आग का शमन न तो तुलसी का युग-सत्य था और न आज का युग-सत्य है। यह काव्य-सत्य हो सकता है, क्योंकि कविता को गंभीर बनाने तथा एक भक्त कवि द्वारा अपने आराध्य के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के भाव को दर्शाने के लिए ऐसे आदर्शवादी प्रयोग हर युग में होते रहे हैं।

**(घ)** फिराक की ग़ज़ल मानवीय भावों का प्रतिबिंब है। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को सामने रखने का माध्यम है। इसमें प्रेम, दर्द, विरह-वेदना तथा दुनियादारी को महत्त्व मिला है। शायर प्रकृति के सौंदर्य को मानवीय चेतना से एकाकार करता है। शायर कलियों की पंखुड़ियों में से निकलती गंध को शब्दों में समेटता है। प्रकृति के इस अद्‌भुत रूप को वह एक नया आयाम देता है। शायर प्रेम में समर्पण को महत्त्व देता है। वह अपने दर्द को दुनिया के सामने प्रकट नहीं होने देना चाहता। वह जानता है कि दुनिया उसके दर्द का मजाक बना देगी। इस प्रकार फिराक की ग़ज़लें मनुष्य की आंतरिक भाव चेतना को शब्दों में ढालने की सफल कोशिश है।

11. **(क)** गर्मी के दिनों में पानी बरसने की कामना करने वाले किशोरवय लड़के हर घर में पानी माँगने जाते थे और घर की महिलाएँ उनके शरीर पर पानी उड़ेल देती थीं। लड़कों की ऐसी टोली को मुहल्ले वाले 'इंदर की सेना' तथा 'मेंढक-मंडली' कहते थे।

**(ख)** लेखक ने स्वयं को आर्यसमाजी संस्कार का माना है, इस कारण वह अंधविश्वासों तथा रूढ़ियों पर चोट करता है। उसे लगता है कि ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़कर उनके गुलाम बन गए।

**(ग)** कुमार सुधार सभा का उद्‌देश्य समाज-सुधार के लिए कार्य करना था। लेखक इस सभा का उपमंत्री था। कुमार सुधार सभा के सदस्य अंधविश्वासों के प्रति लोगों को सजग कर रहे थे।

**अथवा**

**(क)** वास्तविक रूप में यहाँ पैसे को पावर बताया गया है, क्योंकि पैसे की क्रय-शक्ति के कारण हम उससे कुछ भी खरीद सकते हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

**(ख)** 'पर्चेज़िंग पावर' में ही पैसे की पावर का रस है, क्योंकि पैसे के बल पर खरीदे गए मकान, कोठी तथा वस्तुएँ हम दूर से ही देख सकते हैं। यह मकान कोठी तथा वस्तुएँ पैसे की शक्ति के सबूत के रूप में कार्य करती है। बैंक बैलेंस आदि तो अप्रत्यक्ष रूप में विद्यमान है जो दिखती नहीं; परंतु घर, मकान-कोठी को कोई अनदेखा नहीं कर सकता।

**(ग)** कुछ लोग संयमी स्वभाव के होते हैं। वे पैसे को बचाए रखने में ही आनंद अनुभव करते हैं। वे अत्यधिक सामान खरीदकर पैसा खर्च करना नहीं चाहते। अधिक खर्चा उन्हें फ़िजूलखर्ची के समान लगता है।

12. **(क)** डॉ आंबेडकर ने जाति प्रथा को एक विडंबना तथा गंभीर समस्या के रूप में देखा है। उनके अनुसार जाति प्रथा व्यक्ति के जन्म से पूर्व ही उसका पेशा निर्धारित कर देती है, जो अस्वाभाविक है। यह समाज के विभिन्न वर्गों को ऊँच-नीच का अनुभव करा देती है। जाति प्रथा गंभीर परिस्थितियों में भी व्यक्ति को पेशा-परिवर्तन की अनुमति नहीं देती। इस कारण यह भारत में बेरोज़गारी का एक प्रमुख तथा प्रत्यक्ष कारण बनी।

**(ख)** 'नमक' कहानी की मूल संवेदना मानवीयता है। स्वतंत्रता के पश्चात् हुए विभाजन ने एक महान् देश को दो छोटे राष्ट्रों में बाँट दिया और लोगों को अपना जन्म स्थान छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। इसके बावजूद, राष्ट्र-विभाजन लोगों के दिलों को नहीं बाँट पाया। आज भी विस्थापित व्यक्ति अपने जन्म स्थान को ही अपना वतन मानता है, भले ही वह किसी भी वतन में रह रहा हो।

**(ग)** जीजी और कुमार सुधार सभा के उपमंत्री बना दिए गए। लेखक के विचारों में बहुत अधिक अंतर था। दोनों की विचारधारा एक-दूसरे के बिलकुल उलट थी। जीजी सभी तीज-त्योहारों, रीति-रिवाज़ों को पूरे ज़ोर-शोर से मनाती थीं और अपने साथ इसमें लेखक को भी शामिल कर लेती थीं, परंतु लेखक इन सभी बातों को अंधविश्वास मानता था। वह आर्य-समाजी संस्कारों से प्रभावित था। उसका दृष्टिकोण तार्किक तथा वैज्ञानिक था। उसके पास हर अंधविश्वास को अनुचित ठहराने के लिए तर्क होते थे।

**(घ)** लेखिका महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंधों की तुलना अपने घर में आने वाले अँधेरे-उजाले, आँगन में खिलने वाले गुलाब के फूल तथा आम से की है। लेखिका के अनुसार, जिस प्रकार वह इन सभी को अपना सेवक या नौकर नहीं मान सकती, उसी प्रकार वह भक्तिन को भी अपनी सेविका या नौकर नहीं मान सकती।

13 *(क)* सिंधु सभ्यता एक सुनियोजित ढाँचे पर आधारित थी। नगरीकरण की विस्तृत संरचना के कारण इसने पुरातत्त्व विशेषज्ञों को अपनी ओर आकर्षित किया है। सिंधु सभ्यता के सभी नगर नदियों के किनारे निर्मित हुए। नगरों में कुएँ तथा स्नानागार स्थापित किए गए थे। मोहनजोदड़ो का वृहत स्नानागार एक विस्तृत ढाँचा है। इनका उपयोग अनुष्ठानों के दौरान किया जाता रहा होगा।

सिंधु सभ्यता के सभी घर एक समान संरचना में निर्मित थे। घरों से जल निकासी के लिए नाले बने थे, जिन्हें पत्थरों से ढका गया था। लेखक सिंधु सभ्यता में जल-तंत्र के विकसित स्वरूप को देखकर इसे 'जल संस्कृति' कहना चाहता है। शायद सिंधु सभ्यता को 'जल संस्कृति' कहना अनुचित भी नहीं है, क्योंकि यहाँ के निवासियों ने जल संसाधन का बेहतर इस्तेमाल किया था।

*(ख)* 'डायरी के पन्ने' पाठ के अंतर्गत ऐन फ्रैंक ने समाज में स्त्रियों की दशा को बहुत दयनीय बताया है। वह मानती है कि पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों की शारीरिक अक्षमता का सहारा लेकर उन्हें अपने से नीचे रखता है, पर आधुनिक समाज में अब स्त्रियों की स्थिति पहले जैसी नहीं रही। ऐन को ऐसा लगता है कि पुरुष स्त्रियों को घर तक ही सीमित रखना चाहते हैं, जिससे वे उन पर अपनी हुकूमत चला सकें। ऐन के विचारों के अनुरूप स्त्रियों को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। वह स्त्री जीवन को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए स्त्री जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है।

वस्तुतः ऐन के उपरोक्त विचार वर्तमान जीवन-मूल्यों के अनुसार अत्यधिक प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में बहुत परिवर्तन आ चुका है। उन्हें समाज में पुरुषों के समकक्ष माना जाने लगा है, पुरुषों के बराबर ही उन्हें अधिकार एवं सम्मान प्राप्त हैं। वे पुरुषों के साथ प्रत्येक क्षेत्र में कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने लगी हैं। अब वे पुरुष की सहयोगिनी बन गई हैं।

आजकल राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, निजी क्षेत्र की कंपनी की सीईओ, प्रबंध निदेशक, अध्यक्ष, पायलट, सेना अधिकारी, पुलिस अधिकारी, सिविल सेवक आदि सभी प्रमुख पदों पर वे आसीन हैं। उन्होंने अपने परिश्रम एवं बुद्धिमत्ता से समाज में उल्लेखनीय प्रस्थिति प्राप्त की है। पुरुष वर्ग में भी यह समझ विकसित हो गई है कि यदि समाज को निरंतर प्रगति की ऊँचाइयों पर ले जाना है, तो स्त्रियों का सहयोग अपरिहार्य है।

14. *(क)* कविता के प्रति लगाव से पूर्व 'जूझ' कहानी का लेखक खेती का काम करते हुए अथवा मवेशी चराते हुए अकेलापन महसूस करता था। उसे बातें करने, हँसी-मज़ाक करने के लिए हर समय किसी-न-किसी व्यक्ति के साथ होने की आवश्यकता महसूस होती; किंतु कविता के प्रति लगाव के बाद लेखक अकेलापन महसूस नहीं करता था।

खेती का काम करते हुए कविता करने तथा ऊँचे स्वर में गायन की प्रवृत्ति के कारण उसे एकांत में रहने की ज़रूरत महसूस होती थी। कविता के प्रति लगाव के बाद अकेलेपन के प्रति उसकी धारणा में पूर्णतः बदलाव आ गया था।

*(ख)* ऐन ने अपनी डायरी की हर चिट्ठी अपनी एक निर्जीव गुड़िया 'किट्टी' को संबोधित करते हुए लिखी। उसने अपने मनोभाव व्यक्त करने का सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम इसे माना।

इससे उसकी भावनाओं की गोपनीयता भी बची रह गई। ऐन का मानना था कि उसे अब तक ऐसा कोई सच्चा साथी नहीं मिला, जो उसकी भावनाओं को समझे। अपने इसी अकेलेपन के कारण ऐन ने गुड़िया 'किट्टी' को संबोधित करते हुए पत्र लिखे, जो उसकी डायरी के रूप में चर्चित हुए।

*(ग)* वाई डी पंत अर्थात् यशोधर बाबू के आदर्श किशनदा थे। किशनदा इस कहानी के हर संदर्भ में हस्तक्षेप करते हुए भी सबसे दूर हैं। उनकी मृत्यु हो चुकी है, किंतु वे अपने मानस-पुत्र यशोधर बाबू के रूप में मानो जीवित हैं।

*उनके व्यक्तित्व की उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं*

- किशनदा सरल हृदय रखने वाले एवं सहयोगी व्यक्ति हैं। वे मूल रूप से पहाड़ी क्षेत्र से संबंधित हैं, जो दिल्ली में नौकरी करते हैं। पहाड़ी क्षेत्र से आने वाले अनेक युवक अपने काम से दिल्ली आने पर उन्हीं के घर में शरण लेते हैं। वे यशोधर बाबू को स्नेह से 'भाऊ' कहकर पुकारते हैं।
- वे अविवाहित हैं तथा उन्होंने अपने घर को मेस जैसा बना दिया है, जहाँ कोई भी व्यक्ति आकर आपसी सहयोग से खा-पका सकता था।
- वे परोपकारी प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं तथा सिद्धांतवादी भी। किशनदा ने ही मैट्रिक पास यशोधर पंत को न केवल सरकारी नौकरी दिलवाने में मदद की, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी जेब से पैसे भी उधार दिए। उन्होंने अपने जीवन में कुछ सिद्धांतों को अपनाया हुआ था, जिनका वे दृढ़ता से पालन करते थे।
- किशनदा अनुभवी व्यक्ति हैं और अपने अनुभवों का लाभ अपने प्रियजनों को भी देते हैं। यशोधर बाबू के व्यक्तित्व निर्माण में किशन दा का अपूर्व योगदान है। वे उन्हें ऑफिस के कार्यों के साथ-साथ जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर भी दिशा-निर्देश देते हैं।

*(घ)* सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी। यहाँ पर साधनों की कमी नहीं है। सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों के आधार पर ही इसकी नगर योजना, कृषि, संस्कृति और कला आदि के बारे में बताया गया है। अवशेषों के कोई लिखित प्रमाण तो नहीं मिले हैं, पर इतनी पुरानी सभ्यताओं के लिखित प्रमाण भी संभव नहीं होते। जो चित्रलिपि यहाँ से मिली है, उसका अध्ययन किया भी नहीं जा सकता। इस आधार पर केवल अवशेषों को ही प्रमाण माना जाता है। मनुष्यों द्वारा ये अवशेष बनाए गए हैं, जो इतने समय के बाद भी अभी तक उपलब्ध हैं।

सिंधु घाटी में ईंटों, मूर्तियों, भवनों इत्यादि के अवशेष मिलते हैं। यहाँ बड़ी तादात में खुदाई के समय इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, चाक पर बने चित्रित भांडे, मुहरें, साज़ो-सामान और खिलौने आदि मिले। इन्हीं अवशेषों के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता का अध्ययन संभव हुआ। इन्हीं प्रमाणों के कारण संपूर्ण सभ्यता व संस्कृति की सुंदर कल्पना की गई है। सिंधु घाटी सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्यबोध है। जो वस्तु जिस प्रकार सुंदर लग सकती थी, उसका उसी प्रकार से उपयोग किया गया था।